सृजन समूह पहल

शिक्षकों के पेशेवर विकास की सम्भावनाएँ

रश्मि पालीवाल

हम शिक्षकों से अमूमन लाचारी, कुण्ठा और निराशा से भरे स्वर सुनते हैं, जिसमें प्रशासन, पाठ्यक्रम, बच्चों, पालकों, समाज के बारे में शिकायतें और अत्यन्त अपेक्षाएँ होती हैं। दूसरी तरफ हम स्वप्रेरित और संवेदनशील शिक्षकों के वृतान्त सुनते हैं, जिनमें वे बच्चों के साथ अपने अनूठे और सन्तोषप्रद प्रयासों को हमारे साथ साझा करते हैं। *उम्मीद के रंग* पुस्तक में और *संदर्भ* के 'शिक्षकों की कलम से' वाले हिस्से में हम ऐसी प्रेरणादायक प्रस्तुतियाँ पढ़ रहे हैं लेकिन शिक्षक अपने स्वयं के विकास के बारे में कम ही विचार करते हैं। अपना स्वयं का विकास, अपनी पढ़ने-लिखने, सोचने-समझने, सृजन करने की क्षमता, कुशलता, विषय का

अपना ज्ञान, विषय और बच्चों के प्रति अपना नज़रिया, स्कूल के संचालन को लेकर अपनी प्रवृत्तियाँ - इन बातों में आ रहे बदलाव और विकास की चर्चा ज़्यादा नहीं होती। क्या इसकी सम्भावना है? शिक्षकों के साथ उनके पेशेवर विकास की जो भी व्यवस्थाएँ हैं, क्या वे इसकी गुंजाइश रखती हैं? स्वप्रेरित शिक्षक अपनी रुचि के अनुसार काम करते हैं, परन्तु क्या उनके और उनके साथ अन्य सामान्य शिक्षकों के समर्थन और संवर्धन के प्रयास से कुछ नया निर्मित कर सकते हैं? इन सवालों के जवाबों की कुछ झलकों के बारे में हम इस लेख में बात करेंगे।

शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) ज़िले की टीम ने, 4 सितम्बर 2022 को रुद्रपुर में शिक्षकों के एक सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें उन शिक्षकों ने शिरकत की जो एपीएफ की पहल पर बनाए गए सृजन समूह से जुड़े हुए थे। सृजन समूह का गठन 2020 में लॉकडाउन के समय में शिक्षकों के साथ नियमित शैक्षिक आदान-प्रदान के लिए किया गया था। हर सप्ताह शिक्षकों को चुनकर पठन सामग्री मोबाइल पर भेजी जाती थी और ऑनलाइन बैठक में लोग शामिल होकर उस सामग्री को पढ़ते थे, उस पर चर्चा करते थे। ऑनलाइन तकनीक के सघन उपयोग से लगभग 40 शिक्षकों के बीच नियमित और विस्तृत विचार-विमर्श की प्रक्रिया सफल रही। दो सालों में लगभग 300 लेख पढ़ने के लिए चुने गए और 100 ऑनलाइन बैठकों में शिक्षकों ने भाग लिया। शायद आपदा को अवसर बनाना इसी को कहते हैं। बाद में, एपीएफ की टीम के साथियों ने इन शिक्षकों के स्कूलों में पहुँचकर सहयोग करना भी जारी रखा। दो साल बाद, सितम्बर 2022 में शिक्षकों ने अपने ये अनुभव रुद्रपुर में आयोजित एक सम्मेलन में लिखकर प्रस्तुत किए।

सृजन समूह के शिक्षकों के स्वरों में सचमुच एक नई सम्भावना का सृजन होता दिख रहा है। ये है शिक्षकों के पेशेवर विकास की प्रक्रिया और व्यवस्था के एक सफल प्रयोग पर चिन्तन करने की सम्भावना। प्रस्तुत आलेखों को पढ़कर और उनका मंच से पठन सुनकर मेरे मन में कई उम्मीदें जागने लगीं। इन शिक्षकों ने अपने पेशेवर विकास के अनुभव पर गौर कर उसके सकारात्मक परिणामों पर आत्मचिन्तन किया था।

यहाँ हम उन कुछ स्वरों को सुनेंगे जो हम तक एक शिक्षक के आत्मिक विकास की गूँज पहुँचाते हैं। सबसे पहली बात जो शिक्षकों ने महसूस की वो यह कि उनके लिए स्वतंत्र अभिव्यक्ति व चिन्तन के अवसरों की कमी थी जो सृजन समूह ने दूर की, जैसे, “मैं यह कहना चाहती हूँ कि हम

सभी शिक्षक साथी अपने विद्यालय में नित्य प्रतिदिन सीखने-सिखाने का कार्य करते हैं - बच्चों को कुछ सिखाना, पाठ्य पुस्तकों पर काम करना या बच्चों के जीवन से जुड़े अनुभव सुनना आदि। इस समूह से जुड़कर हमें प्रोत्साहन के साथ-साथ अपनी अभिव्यक्ति का मंच भी मिला जहाँ हम स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखते और सुनते हैं।”

फिर, शिक्षकों की पढ़ने की रुचि बनी, उन्हें पढ़ने का मतलब समझ में आया– जैसे, “समूह में जब आलेखों पर चर्चा होती है या पूछा जाता है कि इस आलेख या कहानी को पढ़कर आपको क्या समझ में आया तो लगता है, अब तक हम केवल पढ़ रहे थे। इसमें क्या समझ में आया, इस ओर तो हमारा ध्यान ही नहीं गया। ऐसा क्यों कहा गया होगा, इस तरफ सोचना शुरू किया। इस तरह की परिचर्चा से हमारे पढ़ने का नज़रिया बदला है।”

पढ़ना-समझना तो है ही और साथ ही अपनी पहले की समझ पर दुबारा से सोचना भी है, यह शिक्षकों ने महसूस किया, जैसे, “लेख पढ़े और अपने मन में जो गलतफहमियाँ थीं, उन्हें भी स्वीकार किया।”

अपनी समझ और अपनी क्षमताओं के विकास में क्या चुनौती है, इसे साहस और हर्ष के साथ स्वीकार करना, शिक्षक के आगे बढ़ने के आत्मविश्वास को बयान करता है। जैसे, “आलोचनात्मक दृष्टि से प्रतिक्रिया दे पाना - अभी मुझे इसे विकसित करने की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि इस दृष्टि को अपनाने में सम्भवतः हमारे मन में सामने वाले के प्रति एक संकोच का भाव होता है कि वह क्या सोचेगा। आलोचना क्या है, कहीं-न-कहीं हमें यह भी समझने की ज़रूरत है। मुझे सदैव इस प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रही है कि कहाँ से बेहतरी मिले और मैं सुदृढ़ बनूँ।”

किसी भी तरह के अतिरिक्त प्रयास के लिए एक आम शिक्षक के मन में जो संकोच रहता है, उसे काबू कर पाने में मिली सफलता पर हर्ष और सन्तोष के स्वर भी उठे, जैसे, “रीडिंग कैंपेन की बात करूँ तो जब बार-बार कहानी की किताबों का ज़िक्र आता था, तो यह सोचती थी कि बच्चे किताब फाड़ देंगे, कितनी पुस्तकें खो जाएँगी, कौन निकाले, कोर्स ही पूरा नहीं होता आदि। इस सन्दर्भ में एपीएफ के लोगों का धन्यवाद करूँगी, पुस्तकालय तो नहीं परन्तु अपनी कक्षा में छोटी-सी लाइब्रेरी बनाई। बच्चे अपना नाम लिखकर एक डायरी में दर्ज़ करते हैं। वे किताब का नाम लिखकर उस किताब को पढ़ने के लिए घर ले जाते हैं और वापस करते समय अपना नाम डायरी में नोट कर आते हैं।”

शिक्षक द्वारा किसी किताब के प्रभाव को शिद्दत से महसूस करने का स्वर हमें सुनाई देता है - ऐसा प्रभाव जो एक नए प्रण को जन्म दे सके। जैसे, "*पढ़ना ज़रा सोचना* किताब पढ़कर मैंने स्कूल में पढ़ने-लिखने का माहौल बनाने की ठानी और फाउण्डेशन के सहयोग से विद्यालय में पुस्तकालय को चालू स्थिति में ले आई, जिसमें फाउण्डेशन के साथियों ने मेरा सहयोग किया। मेरे विद्यालय में पढ़ने की घण्टी का प्रयोग एक से पाँच तक के बच्चों में जारी है। मैंने तय किया है कि मेरे बच्चे केवल वर्णमाला वाली शिक्षण प्रक्रिया के पार्ट नहीं बनेंगे। वे कविता, कहानी व अच्छा बाल साहित्य पढ़कर अच्छे पाठक बनेंगे। यह अन्तर्दृष्टि भी इसी समूह से मिली।"

अपनी पेशेवर क्षमता और अपने कार्य की दिशा को नए सिरे से आकार देने के अलावा शिक्षकों के विकास की एक प्रक्रिया में बच्चों के साथ उनके सम्बन्ध भी बहुत अहम भूमिका निभाते हैं। सृजन समूह से जुड़कर शिक्षकों ने कैसे इस सम्बन्ध पर गौर किया, यह उनकी डायरी में लिखे अनुभवों से झलकता है। एक शिक्षक बच्चों के बारे में अपनी मानसिकता पर इस तरह पुनर्विचार कर सकता है, जैसे, "आज बच्चों की बातें सुनकर अजीब-सा लग रहा था कि हम बच्चों को रोज़ विद्यालय न आने पर कितना डाँटते हैं। परन्तु कुछ बच्चों के घर में बहुत परेशानियाँ हैं और हमें इसे समझने की ज़रूरत है तभी हम ठीक-से अपना शिक्षण कार्य कर पाएँगे।"

इसी तरह एक अन्य शिक्षक ने बच्चे के साथ अपने एक अनुभव पर विचार करते हुए लिखा कि, "हम वयस्क बच्चों को बच्चा समझकर कुछ भी इसलिए करते हैं कि हम समझते हैं कि बच्चे अभी बच्चे हैं। हम जो कर रहे हैं या कह रहे हैं, उसको बच्चे नहीं समझते हैं। पर बच्चे बहुत अच्छे अवलोकनकर्ता होते हैं, वे बहुत कुछ देखते-समझते हैं। हम वयस्कों को अपने व्यवहार पर बहुत अधिक ध्यान देने और उसमें सुधार करने की ज़रूरत है, जिससे बच्चों को एक अच्छी परवरिश मिल सके और वे भी भविष्य में अच्छे व्यक्ति बन सकें।"

स्वआकलन करना शिक्षकों के विकास को बल देने वाली एक उपयोगी प्रक्रिया हो सकती है। सृजन समूह में इस दिशा में भी प्रयास करने की तैयारी की गई। स्वआकलन करने के महत्व को शिक्षकों ने व्यक्त किया, जैसे, "अपनी कमियों को सुधारने तथा बेहतरी की तरफ आगे बढ़ने के लिए यह ज़रूरी है। इस पर विस्तार से चर्चा हुई। इसके कुछ बिन्दु हमने सोचे, जैसे क्या शिक्षक अपनी कक्षा के बच्चों की पारिवारिक आर्थिक पृष्ठभूमि को अच्छे से समझते हैं? अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने की

प्रवृत्ति को अच्छे से समझते हैं? कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों को अभिव्यक्ति के मौके देते हैं? सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करते हैं? बच्चों के घर-परिवार की भाषा को महत्व देते हैं? यह बहुत रोचक प्रक्रिया है और एक अवसर है, स्वयं के अन्दर झाँकने का।"

सृजन समूह से जुड़े शिक्षकों में आत्मावलोकन का स्वर उठा है और शिक्षा के बारे में अपनी नई समझ का स्पष्ट सरल निचोड़ भी उनके द्वारा व्यक्त होता दिखता है, जैसे, "अब यह भी समझ में आने लगा है कि हम क्या नहीं कर सके हैं और बच्चों से हमने क्या नया सीखा – यह आसानी-से स्वीकार होने लगा है, जो मेरे विचार से एक शिक्षक के लिए बहुत ज़रूरी है।"

कुछ समग्र बिन्दु जिन पर समझ बनी है कि:

- सीखना द्विमुखी प्रक्रिया है।
- पढ़ने का अर्थ है समझकर पढ़ना।
- बच्चे बातचीत, कविता, कहानी, खेल से जल्दी सीखते हैं।
- हर बच्चा सीख सकता है।
- बच्चे को जानना हर समस्या का निदान है।
- पूर्व तैयारी व प्रभावपूर्ण योजना से उद्‌देश्य पूर्ण हो सकता है।
- हमें पढ़ाना नहीं है बल्कि सीखने की प्रक्रिया में शामिल होना है।
- बच्चे नयापन पसन्द करते हैं।
- सीखने का वातावरण तैयार करना, अच्छे सुगमकर्ता की पहचान है।

रुद्रपुर सम्मलेन में जो अनुभव शिक्षकों ने पेश किए, उनमें से कुछ अनुभव आधारित आलेखों को हम *संदर्भ* के आगामी अंकों में पढ़ सकते हैं। इस तरह के लेखन से शिक्षक विकास के कार्यक्रमों की दिशा नज़र आने लगती है।

रश्मि पालीवाल: *एकलव्य* के सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम से जुड़ी रही हैं। विभिन्न राज्यों में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए पाठ्‌यक्रम व पाठ्‌यसामग्री निर्माण कार्य में सघन योगदान।

चित्र: पूजा के. मैनन: *एकलव्य*, भोपाल में बतौर जूनियर ग्राफिक डिज़ाइनर काम कर रही हैं। चूँकि वे अन्यथा बातचीत करने में झिझकती हैं, स्केचिंग ने उनके विचारों को सम्प्रेषित करने और टिप्पणियों का दस्तावेज़ीकरण करने में एक माध्यम का काम किया है।